22(p)
789
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1212
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 789

2011

891.431
M927S

स्वदेशी गायन-रत्न

784

श्री मुंशीसिंह "रत्न" दलेलनगर-निवासी

पो० गोकुल बेहटा, जि० हरदोई

* वंदे मातरम् *

स्वदेशी गायन-रत्न

[चुने हुए २० राष्ट्रीय गायन-रत्न]

यह हिंद है हमारा, हम हिंद के निवासी।
इसमें हुए हैं पैदा, इसमें ही हम मरेंगे॥
है अख़्तियार उनको, सर तक क़लम करा दें।
पर हम भी धर्म-पथ से, हरगिज़ नहीं टरेंगे॥

संकलनकर्ता और प्रकाशक
श्रीमुंशीसिंह "रत्न"
दलेलनगर-निवासी
पो० गोकुल बेहटा, प्रांत हरदोई

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथमावृत्ति] सन् १९३० ई० [मूल्य -)॥ मात्र

मुद्रक—पं० मन्नालाल तिवारी,
हरीकृष्ण कार्यालय, शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ.

हिंदू-समाज-सुधार-कार्यालय, लखनऊ का
सुप्रसिद्ध लोकप्रिय पुस्तकें !!

ईश्वर-विनय	-)	अछूत-पुकार	-)
नारी-संगीत-रत्न (प्रथम भाग)	-)	स्वदेशी-प्रचार व विदेशी-बहिष्कार	-)
नारी-संगीत-रत्न (द्वितीय ,,)	-)	भजन कुरीति-निवारण ...	-)
सीता-सती	-)	द्विजाति कौन हैं ? ...	-)
सोहागरात के वादे ..	-)	हिंदू-समाज में महाक्रांति के कारण	-)
अनमेल-विवाह	-)	सुदर्शनचक्र चरखा ...	-)
विधवा-विलाप	-)	सावित्री-सत्यवान ...	=)
कन्या-संगीत-रत्न ...	-)	नारी-संगीत-रत्न (चारो भाग)	।)
औंधी खोपड़ी और घोंघाबसंत	-)	साम्यतत्त्व (हिंदू-साम्यवाद)	।।=)
वेश्या-दोष-दर्शन... ...	-)	'आर्य और वेद' (वैदिक सभ्यता)	।।।=)
जुआ-दोष दर्शन... ...	-)	मूल भारतवासी और आर्य	१।।)
नशा-दोष-दर्शन	-)	राष्ट्रपति जवाहरलाल (सचित्र)	।।=)

नोट—इकन्नी-माला की पुस्तकें प्रचारार्थ ३=) की १०० दी जाती हैं ।

"रत्न" राष्ट्रीय प्रचारक मंडल की पुस्तकें

ग़रीब भारतीयों की पुकार	=)	नारी-उपदेश-भंडार ...	-)।।
म० गां० का राष्ट्रीय बिगुल	=)।।	उपदेश-रत्न-माला ...	-)।।
राष्ट्रीय वीणा की झनकार...	-)।।	ईश्वर-भजन-माला ...	-)।।
क्रांति की गूँज	-)।।	आनंद-रत्न-माला ...	-)।।
स्वदेशी गायन-रत्न ...	-)।।	द्रौपदी-शतक	-)
स्वतंत्र भारतीय गायन ...	-)।।	चौमासे व बारहमासे, प्रत्येक	)।।

मुंशीसिंह रामसिंह बुकसेलर
हाता नं० ४, मकराबटगंज, कानपुर

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 789
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

* वंदे मातरम् *

स्वदेशी गायन-रत्न

१. ईश्वर-विनय

भगवन् ! हमारा जीवन, संसार के लिये हो।
गर ज़िंदगी हो मेरी, उपकार के लिये हो॥
ब्रह्मचर्य के व्रती हों, सत्धर्म के रती हों।
मन में लगन लगी हो, परचार के लिये हो॥
उद्देश को अधूरा, मर जायँ पर न छोड़ें।
पतवार बुद्धि कर में, मँझधार के लिये हो॥
लाखों ही दुख पड़ें पर, नहिं सत्य से डिगें हम।
सत्याग्रही भी सच्चे, शुभकार के लिये हों॥
आलस्य आदि दुर्गुण, छू भी सकें न मुझको।
तन-मन हमारा सच्चे, व्यवहार के लिये हो॥
उत्तम स्वभाव मेरा, दुशमन का दिल रिझावे।
वह देखते ही कह दे, तुम प्यार के लिये हो॥
तन-मन वचन व धन से, जग का सदा भला हो।
चाहे हमारी गर्दन, तलवार के लिये हो॥
वीणा बजे तुम्हारी, दिल में "प्रकाश" मेरे।
सर्वस्व मेरा अर्पण, झनकार के लिये हो॥

२. वंदेमातरम्

आहा ! क्या ही ओजमय है, शब्द वंदेमातरम् ।
बोल दो बस हिंदियो, अब मंत्र वंदेमातरम् ॥
मुख में वंदेमातरम् है, मन में वंदेमातरम् ।
नाड़ियों के रक्त में बहता है वंदेमातरम् ॥
खंजरे क़ातिल भले ही क़त्ल कर देवे हमें ।
चीख़ भी निकलेगी, तो निकलेगी वंदेमातरम् ॥
बल ज़रा मक़तूल के चेहरे पै हो, मुमकिन नहीं ।
हर लहू के क़तरे से टपकेगा वंदेमातरम् ॥
ख़ून मक़तल में बहेगा यों ही क्या, हरगिज़ नहीं ।
भूमि पर लिखता चलेगा शुद्ध वंदेमातरम् ॥
बावजूद इसके कि बोलें सबसे पहले और कुछ ।
दुधमुँहे बच्चे भी बोलें, शब्द वंदेमातरम् ॥
"बेनीमाधव" तप यही, सिजदा यही, मंदिर यही ।
है यही मसजिद, यही मज़हब है वंदेमातरम् ॥

३. वंदेमातरम्

शुद्ध सुंदर अति मनोहर शब्द बंदेमातरम् ।
मृदुल सुखकर दुःखहारी, मंत्र बंदेमातरम् ॥
मंत्र यह है, तंत्र यह है, जंत्र बंदेमातरम् ।
सिद्धि-दायक बुद्धि-दायक, एक बंदेमातरम् ॥
ओजमय, बल-कांतिमय, सुख-शांति बंदेमातरम् ।
मतिप्रदायक, अति सहायक, मंत्र बंदेमातरम् ॥
हर घड़ी, हर बार हो, हर ठाम बंदेमातरम् ।
हरदम हमेशा बोलियो, गुरुमंत्र बंदेमातरम् ॥
हर काम में, हर बात में, दिन-रात बंदेमातरम् ।

जपिए निरंतर शुद्ध मन से मंत्र बंदेमातरम् ॥
सोते समय, खाते समय, कलगान बंदेमातरम् ।
आठो पहर दिल में रहे मृदुतान बंदेमातरम् ॥
मुख में, हृदय में, रात-दिन हो जाय बंदेमातरम् ।
हो नाड़ियों के रक्त में संचार बंदेमातरम् ॥
तेग़ से सिर भी कटे भूलो न बंदेमातरम् ।
मोद की चिड़ियाँ गुँजा दो नाद बंदेमातरम् ॥
जेल में हो, तो जपो शुभ जाप बंदेमातरम् ।
बेड़ियों को ही बजाकर गाओ बंदेमातरम् ॥
तीर गोली तोप की है आड़ बंदेमातरम् ।
तेग़ बरछी के लिये है ढाल बंदेमातरम् ॥
कर्ण का दृढ़ कवच है, इक शब्द बंदेमातरम् ।
विश्व-विजयी, शत्रु-विजयी, मंत्र बंदेमातरम् ॥

४. वंदेमातरम्

हम हैं शैदा और है दिलदार बंदेमातरम् ।
हो ज़ुबाँ पर मरते दम हर बार बंदेमातरम् ॥
बेड़ियाँ पहनेंगे, तो हरएक क़दम पर देखना ।
बोलती जाएगी हर झनकार बंदेमातरम् ॥
है नहीं हाजत हमें मैशीनगन और तोप की ।
जब कि दिल में है हमारे नक़्श बंदेमातरम् ॥
गोलियों की हो अगर बौछार, तो परवा नहीं ।
रोक लेगी दुशमनों का वार बंदेमातरम् ॥
इस क़दर विरदे ज़ुबाँ हो, तो जलें वह और भी ।
जलते हैं सुन-सुनके जो अग़यार बंदेमातरम् ॥
दब नहीं सकते तेरी इन धमकियों से हम कभी ।
कह रहे हैं फिर सरे बाज़ार बंदेमातरम् ॥

देख लें 'फ़िकरी' कि कितना जोश है दिल में भरा।
कह दो हाँ ललकारकर इक बार वंदेमातरम्॥

५. तिरंगा झंडा

जीवन की ज्योति जगाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने।
होना बलिदान सिखाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने॥
वीरों का हर्ष बढ़ाया है, उत्साह हृदय में छाया है।
हृद्-तंत्री को झनकाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने।
नूतन आनंद दिखाया है, स्वर्गोपम देश बनाया है।
स्वातंत्र्य-मार्ग दिखलाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने॥
मद-मत्सर दूर भगाया है, चित शांत लहर लहराया है।
अरिदल का दिल दहलाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने॥
यदि इसकी शान न जावेगी, "रस-रंग" संपदा आवेगी।
कर्तव्य अपूर्व सिखाया है, इस तरल तिरंगे झंडे ने॥

६. "स्वराज्य होगा"

भँवर के चक्कर से पार अब यह स्वतंत्रता का जहाज़ होगा।
वह दिन मुबारक है अनेवाला कि हिंद में जब स्वराज होगा॥
फ़िज़ूल-ख़र्ची मिटेगी सारी, चलेगा चर्ख़ा, बनेगी खादी।
निहाल होंगे स्वदेश-भाई, जब अपना भारत में राज होगा॥
पड़े नशेबाज़ियों में जो थे, ख़बर न जिनको थी घर को मुतलक़।
वे होश में कुछ हैं आते जाते, ठिकाने जल्दी मिज़ाज होगा॥
बिना किए ये स्वतंत्र भारत, न चैन पल-भर भी लेने देंगे।
अभी खुजाते हैं दाद को वह, यही फिर आख़िर को खाज होगा॥
नहीं ठहर सकते रागिए ये, बजाया मोहन ने राग आला।
समाज सारा इधर ही होगा, मिला हुआ सुर में साज होगा॥
जिसे समझते थे मर्ज़ मोहलिक, वही अब आया समझ में आसाँ।
मसीहा गांधी नज़र है आया कि जिसके ज़रिए इलाज होगा॥

गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा पड़ा हुआ था स्वदेश भारत।
प्रबल समय के प्रताप से अब, छुटेगा जल्दी सुकाज होगा॥
बढ़ेगा धन-धान्य, मान-विद्या, अकाल से फिर सुकाल होगा।
विनोद-आनंद होंगे घर-घर, "सदा" जो सस्ता अनाज होगा॥

७. आज़ादी या मौत (ग़ज़ल)

अब तो आज़ादी विना जीना हमें दुशवार है।
इसलिये ही मुल्क मर मिटने को अब तैयार है॥
आबरू इज़्ज़त गँवाकर हो गए कैसे ज़लील।
हा! हमारी ज़िंदगी संसार में भू-भार है॥
इंतज़ारी हो चुकी, अब सब्र भी जाता रहा।
उनकी बातों पर हमें कुछ भी नहीं इतबार है॥
ज़िंदगी वह ख़ाक है जिसमें न आज़ादी रहे।
इस गुलामी ज़िंदगी को बार सौ धिक्कार है॥
है तमन्ना दिल की यह, आज़ाद ही होकर रहें।
सब दिलों की धुन यही, यह सब दिलों का तार है॥
मुल्क हो आज़ाद, तकलीफ़ें उठाएँगे सभी।
जेल जाने से ज़रा हमको नहीं इनकार है॥
गोलियाँ हम पर चलें, शूली मिले, फाँसी चढ़ें।
गन मशीनों से भी अब, मरना हमें स्वीकार है॥
नरक भी जाना पड़े, तो हम खुशी से जायँगे।
हिंद के उद्धार को वह स्वर्ग ही का द्वार है॥

८. अहिंसात्मक संग्राम (ग़ज़ल)

किसे हुब्बे वतन कहते, किसे बलिदान कहते हैं।
अजी हँसते हुए मरकर, जगत् को हम दिखा देंगे॥
"नहीं अन्याय का सहना" अगर अपराध कहते हो।
तो हम अपराधियों में नाम अपना भी लिखा देंगे॥

उन्हें है नाज़ एरोप्लेन, सेना, गन-मशीनों पर।
अहिंसा-अस्त्र का हम भी मज़ा उनको चखा देंगे॥
पड़ा है सामना बल पाशविक से आत्मिक बल का।
उन्हें हम बुद्ध-ईसा का कथन सच्चा दिखा देंगे॥
जंग यह बेमिसल होगी, तमाशा देखेगी दुनिया
खड़े रह जायँगे, हथियार सब उनके रखा देंगे॥
उधर साइंस का बल है, इधर यह नव परीक्षा है।
अतुल बल शक्ति सत्याग्रह, अमल करके दिखा देंगे॥

९. वीर बालिकाओं की प्रतिज्ञा

हम देख चुकी हैं सब कुछ पर, अब करके कुछ दिखला देंगी।
निज धर्म-कर्म पर दृढ़ होकर, कुछ दुनिया को सिखला देंगी॥
है क्या कर्तव्य हमारा अब, पहचान लिया हमने उसको।
अरमान यही अब दिल में है, हम उनके हृदय हिला देंगी॥
समझो न हमें कन्याएँ हैं, हम दुष्ट-नाशिनी दुर्गा हैं।
कर सिंहनाद आज़ादी का, दुष्टों का दिल दहला देंगी॥
राष्ट्रीय ध्वजा लेकर कर में, गावेंगी राष्ट्र-गीत प्यारे।
दौड़ाकर बिजली भारत में, मुर्दे भी तुरत जिला देंगी॥
बेड़ियाँ गुलामी काटेंगी, आज़ाद करेंगी भारत को।
उजड़े उपवन में भारत के, अब प्रेम-प्रसून खिला देंगी॥
कंपित होगी धरती ही क्यों, हाँ आसमान हिल जावेगा।
"कविरत्न" वज्र की भाँति तड़प, रिपुदल का दिल दहला देंगी॥

१०. युवकों की प्रतिज्ञा (ग़ज़ल)

भारत! मैं तेरे नाम का डंका बजाऊँगा।
संसार का शिरमौर तुझे फिर बनाऊँगा॥
रहने न दूँगा माँ की गुलामी की बेड़ियाँ।
आज़ाद बनाऊँगा, तभी चैन पाऊँगा॥

डंडे पड़ेंगे मुझ पै या हो गोलियों की मार।
तो शौक़ से मैं सामने सीना अड़ाऊँगा॥
हिंसा को स्वप्न में भी न लाऊँगा हृदय में।
ख़ंजर से सितमगर के मैं बोटी कटाऊँगा॥
बौछार गोलियों की हो या तेग़ों की हो मार।
माता के लिये शीश मैं अपना चढ़ाऊँगा॥
घर-घर में चला चर्ख़ा, बना करके सूत को।
लाखों-करोड़ों थान मैं खादी बनाऊँगा॥
कपड़े विदेशी मुल्क में बिकने न दूँगा मैं।
खादी से देश-भाइयों के तन सजाऊँगा॥
मैंचेस्टर-लंकेशायर ने लूटा है देश को।
अब ताले चढ़ा उनकी मिलों को रुलाऊँगा॥
गाँजे शराब ताड़ियों की जा दुकानों पर।
कर जोड़ भाइयों से नशों को छुड़ाऊँगा॥
जिन ज़ालिमों ने देश को बरबाद किया है।
उनके किए का फल बुरा, उनको चखाऊँगा॥
अबतक जो लुटा मालो-ज़र वह कम है कुछ नहीं।
लुटने न दूँगा, देश की दौलत बचाऊँगा॥
ऐ "भीम" न कर सोच, ये मोहन ने कहा है—
"स्वाधीन मातृभूमि मैं अपनी बनाऊँगा॥"

११. प्यारा जवाहर

भारत-युवक-हृदय का अरमान है जवाहर।
निज राष्ट्र-बाँसुरी की मृदु-तान है जवाहर॥
उठती हैं इसके रग में जातीयता की लहरें।
शुचि सादगी के घर का सामान है जवाहर॥

कृषकों का है कलेजा, श्रम-जीवियों का भेजा।
अंत्यज अनाथगण का, प्रिय प्रान है जवाहर॥
असमानता पिशाचिन के सिर के काटने को।
उत्साह एकता का किरपान है जवाहर॥
सच्चा है शुद्ध सेवक, भारत-वसुंधरा का।
अद्‌भुत बली अली है, हनुमान है जवाहर॥
वैरी-विरोधियों के चकमों में है न आता।
इतिहास का है पंडित, गुण-खान है जवाहर॥
माता का लाड़ला है, प्यारा है ये पिता का।
गांधी महात्मा का, फ़रमान है जवाहर॥
ऐ आँखवालो, आओ, देखो, इसे परेखो।
देवी स्वतंत्रता की संतान है जवाहर॥
मृतकों में फूँकता है यह रूह आबरू की।
"कविश्याम" युवक-दल का कप्तान है जवाहर॥

१२. स्वदेश-प्रेम (चेतावनी)

उठो, भलाई करो वतन की, तुम्हें जवाहर जगा रहा है।
निसार कर दो स्वदेश पर जाँ, ये पाठ प्यारा पढ़ा रहा है॥
जगीं जहाँ की हैं क़ौमें सारी, तुम्हें कहाँ से है नींद आई।
ख़बर नहीं क्या ज़रा भी तुमको, कि ज़ुलम ज़ालिम मचा रहा है॥
उठो, न आलस्य अब करो यों, बढ़ा दो जल्दी क़दम अगाड़ी।
बना दो आज़ाद देश को तुम, जो दुःख मुद्दत से पा रहा है॥
उठा अहिंसा-कटार कर में, उड़ा दो ज़ंजीर दासता की।
दिखा दो ज़ालिम को अपना जौहर, जो बेकसों को सता रहा है॥
तुम्हारे ही ज़र की लूट करके, हुआ जो ख़ुशहाल शक्तिशाली।
वही "नरायन" तुम्हारा देखो, बुरी तरह ख़ूँ बहा रहा है॥

१३. राष्ट्रपति जवाहरलाल

भारत का डंका आलम में, बजवाया वीर जवाहर ने।
स्वाधीन बनो, स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर ने॥
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हठ करके, जगवाया वीर जवाहर ने॥
अँगरेज़ों की मृगतृष्णा में, भूले थे भारतवासी सब।
पूरी आज़ादी का मन्तर, सिखलाया वीर जवाहर ने॥
दे दे स्पीचें ज़िन्दा-दिल, कमज़ोरी दूर भगा दी सब।
रग-रग में खूँ आज़ादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने॥
घोंटी है राजनीति उसने, छानी है ख़ाक विदेशों की।
समता स्वतंत्रता का मारग, दिखलाया वीर जवाहर ने॥
पूँजीपति ज़मींदार करते हैं, ज़ुल्म मजूर किसानों पर।
बन साथी दीनों का धीरज, धरवाया वीर जवाहर ने॥
हिंदू, मुसलिम, सिख, जैन, इसाई पार्सी भाई-भाई हैं।
सब ऊँच-नीच का भेद-भाव, मिटवाया वीर जवाहर ने॥
इक रोशन आग धधकती है, आज़ादी की उसके दिल में।
जिससे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवाहर ने॥
नवयुवक करोड़ों भारत के, भूले थे भोग-विलासों में।
युवकों की शक्ती को एकदम, उकसाया वीर जवाहर ने॥
आदर्श चरित से वह अपने, युवकों है सम्राट बना।
आज़ादी का ऊँचा झंडा, लहराया वीर जवाहर ने॥
बिजली है वाणी में उसकी, जादू है आँखों में उसकी।
देखा जिसको इक पल-भर में, अपनाया वीर जवाहर ने॥
गांधी जब आशिष दे बोले—"खुद क्लर्क बनूँगा मैं तेरा"।
तब सेहरा राष्ट्रपती का सिर, बँधवाया वीर जवाहर ने॥
लखकर "प्रकाश" अब भारत का, अचरज में डूबी है दुनिया।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में, मुसकाया वीर जवाहर ने॥

१४. स्वतंत्र भारत

अहाहा मोहन के मुँह से निकला, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत।
सुना सभी ने सचेत होकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत॥
विशाल लवपुर के लक्खी दल में, महासभा के वितान-तल में।
कहा ये गांधी ने रावी-तट पर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत॥
समय था उन्तीस सन् का आख़िर, प्रमत्त थे राज-मद में शासक।
सुनाया गांधी ने तब गरजकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत॥
समीर में, नीर में, गगन में, वचन में, तन में, हरेक मन में
समा गया वह महा मधुर स्वर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत॥
हरेक घर में मची हुई है, स्वतंत्रता की अजीब हलचल।
ये कहते बच्चे गोहार करकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत॥
स्वतंत्रता के लिये सभी के, दिलों में जलती है आग भारी।
हैं देखते स्वप्न में भी पड़कर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत॥
बनाए कुटिया स्वतंत्रता की, सपूत जेलों में रम रहे हैं।
तपस्वी देखेंगे अब निकलकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत॥
कुमारी हिमगिरि अटक-कटक लों, बजेगा डंका स्वतंत्रता का।
कहेंगे नर-नारी जग के लखकर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत॥
रहा हमेशा स्वतंत्र भारत, रहेगा फिर भी स्वतंत्र भारत।
"प्रकाश" बाँटेगा विश्व को फिर, स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत॥

१५. ग़ज़ल दादरा

टेक—गांधी बाबा ने हलचल मचाय दिया है।
अब आज़ादी का डंका बजाय दिया है॥
शेर—हिंद आज़ाद करेंगे, उन्होंने ठाना है।
सत्य-आग्रह व अहिंसा को अस्त्र माना है।
किया प्रयोग आफ्रिक़ा में इसे जाना है।

इसी से अब उन्हें सरकार को मनाना है।
ऐसी स्वतंत्र घोषणा अब तो,
खुल्लम खुल्ला सुनाय दिया है॥ गांधी० १
शेर—पूर्ण स्वराज्य को लिए बिना न छोड़ेंगे।
भीख माँगेंगे नहीं, औ न हाथ जोड़ेंगे।
छेड़कर शांत समर मुँह कभी न मोड़ेंगे।
बेड़ी परतंत्रता की अपने हाथ तोड़ेंगे।
कष्ट सहनकर स्वार्थ त्यागकर,
अपने चलन से दिखाय दिया है॥ गांधी० २
शेर—सत्य विजयी रहा, इतिहास यह बताता है।
झूठ की हार हुई, देखने में आता है।
रोज़ ठेठर व सिनेमा यही दिखाता है।
राम-रावण का समर भी यही सिखाता है।
बिना अस्त्र के सत्याग्रह से,
उनके दिलों को हिलाय दिया है॥ गांधी० ३
शेर—ज़ुल्म सहते हैं वे, ज़ालिम की भलाई करते।
सुपथ सुझाते हैं, उसकी न बुराई करते।
प्रेम और सत्य के बल को उसे दिखाते हैं।
बुद्ध औ ईसा की शिक्षा अमल में लाते हैं।
पशु-बल, कूटनीति, अतुलित बल,
सब ही का छक्का छुड़ाय दिया है॥ गांधी० ४

१६. ग़ज़ल दादरा

टेक—होवे भारत स्वतंत्र करेंगे यतन।
शेर—जेल जाने से ज़रा भी नहीं इनकार हमें।
कष्ट, संकट व विपत है सभी स्वीकार हमें।
डंडे, गोली व गन मशीन की भी मार हमें।

इनसे भी बढ़के तेरी मार अंगीकार हमें।
हम तो 'भारत स्वतंत्र' करेंगे रटन ॥ होवे० १ ॥
शेर—स्वर्ग में, नर्क में, जहाँ कहीं भी जाएँगे।
गीत 'भारत स्वतंत्र' के सदा सुनाएँगे।
बुद्ध-ईसा की सीख विश्व को सिखाएँगे।
हम तो मारेंगे नहीं, मार भले खाएँगे।
होगी भाषा स्वदेशी, स्वदेशी बसन ॥ होवे० २ ॥
शेर—शुद्ध खादी का सदा हर्ष से प्रयोग करें।
स्वदेशी वस्तुओं का ही सदा उपयोग करें।
विश्वव्यापी हो स्वदेशी, यही उद्योग करें।
भाव भर दें कि स्वदेशी से नहीं लोग डरें।
करें भारत स्वतंत्र स्वदेशी जपन ॥ होवे० ३ ॥
शेर—हमको वे छेड़ें, सताएँगे औ रुलाएँगे।
हम न कुछ बोलेंगे औ क्रोध भी न लाएँगे।
कष्ट सह-सहके उनमें दर्दे-दिल उगाएँगे।
हार जाएँगे वे फिर ज़ुल्म भी हटाएँगे।
ऐसा उनको दिखाएँगे कष्ट-सहन ॥ होवे० ४ ॥
शेर—कौन कहता है कि सत्याग्रह में बल है नहीं।
इससे बढ़कर तो कहीं जग में कोई कल है नहीं।
बात सच है कि कपट और इसमें छल है नहीं।
कौन ऐसी है समस्या, जो इससे हल है नहीं।
यह तो चक्र-सुदर्शन है दुष्ट-दलन ॥ होवे० ५

१७. हसरते-दिल

देखना है किस क़दर दम ख़ंजरे क़ातिल में है।
अब भी यह अरमान, यह हसरत, दिले बिस्मिल में है ॥
ग़ैर के आगे न पूछो, इसमें है इक ख़ास राज़।

फिर बता देंगे तुम्हें, जो कुछ हमारे दिल में है॥
खींचकर लाई है सबको, क़त्ल होने की उमीद।
आशिक़ों का आज जमघट, कूचए क़ातिल में है॥
फिरते हो क्यों हाथ में, चारों तरफ़ ख़ंजर लिए।
आज है यह क्या इरादा, आज यह क्या दिल में है॥
एक से करता नहीं क्यों, दूसरा कुछ बातचीत।
देखता हूँ मैं जिसे वह, चुप तेरी महफ़िल में है॥
उस पर आफ़त आयगी, इक रोज़ मर ही जायगा।
वह तो दुनिया में नहीं, जो कूचए-क़ातिल में है॥
एक जानिब है मसीहा, एक जानिब है क़ज़ा।
किस कशाकश में पड़ी है, जान किस मुशकिल में है॥
ज़ख़्म खाकर भी उसे है, ज़ख़्म खाने की हवस।
हौसला कितना तड़पने का तेरे बिस्मिल में है॥

१८. वीर नारी की पति से विनय

मँगा दो ऐ मेरे प्रीतम! मुझे चर्ख़ा चलाना है।
मुफ़्त में बैठने का अब नहीं प्यारे ज़माना है॥
विदेशी वस्त्र जो रक्खे उन्हें अब फूक डालो तुम।
बनें कपड़े स्वदेशी अब यही दिल में समाना है॥
मुझे तो लाज आती है, विदेशी अब पहनूँगी।
बनूँ वालंटियरनी मैं, मुझे झंडा उठाना है॥
शर्म को त्यागकर प्रीतम, करूँ आज़ाद भारत को।
करूँ परदा नहीं हरगिज़, न मन में भी लजाना है।
हमारा देश भारत है, ये प्राणों से पियारा है।
इसी के वास्ते एक दिन, हमें गर्दन कटाना है॥
कहे अब "रत्न" बहनों से, निकलकर आज मैदाँ में।
दुखी भारत बहुत दिन से अब आज़ादी कराना है॥

१९. चाहिए

शांति के मैदान में ख़ुश होके आना चाहिए।
सत्य-आग्रह के लिये तन-मन लगाना चाहिए॥
देश-सेवा में लगाना प्राण की बाज़ी पड़े।
तो ख़ुशी से हम सबों को सिर कटाना चाहिए॥
देश-सेवक सह रहे हैं, कष्ट भारी आजकल।
साथ दे उन सज्जनों का, दुख बटाना चाहिए॥
दुख सहे बिन भाइयों का दुःख कैसे दूर हो।
स्वार्थ-साधन से सबों को दिल हटाना चाहिए॥
तोड़ दो ज़ंजीर अब तो दासता की मित्रवर।
पाठ आज़ादी का अब सबको पढ़ाना चाहिए॥
किंतु हिंसा का समय हरगिज़ नहीं है भाइयो।
नम्रता-युत सत्य-आग्रह को निभाना चाहिए॥
अब हटाओ अपने मन से वैर-भावों को "दिनेश"।
संगठन कर प्रेम से सबको मिलाना चाहिए॥

२०. प्रतिज्ञा

जब तक रहेंगे ज़िंदा भारत का दम भरेंगे।
निज देश-भाइयों का, ता उम्र दुख हरेंगे॥
वह हमको बे वजह जो तकलीफ़ दे रहे हैं।
ख़ालिक के रूबरू हम कहते नहीं डरेंगे॥
है अख़्तियार उनको, सर तक क़लम करा दें।
पर हम भी धर्म-पथ से, हर्गिज़ नहीं टरेंगे॥
यह हिंद है हमारा, हम हिंद के निवासी।
इसमें हुए हैं पैदा, इसमें ही हम मरेंगे॥
देकर के दम दिलासा दिल को दुखा रहे हैं।
"सरयू" ये ज़ुल्म जाने कब तक किया करेंगे॥

॥ इति ॥

स्वतंत्र भारतीय गायन

संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष, भारतीय स्वतंत्रता के तपस्वी महारथी

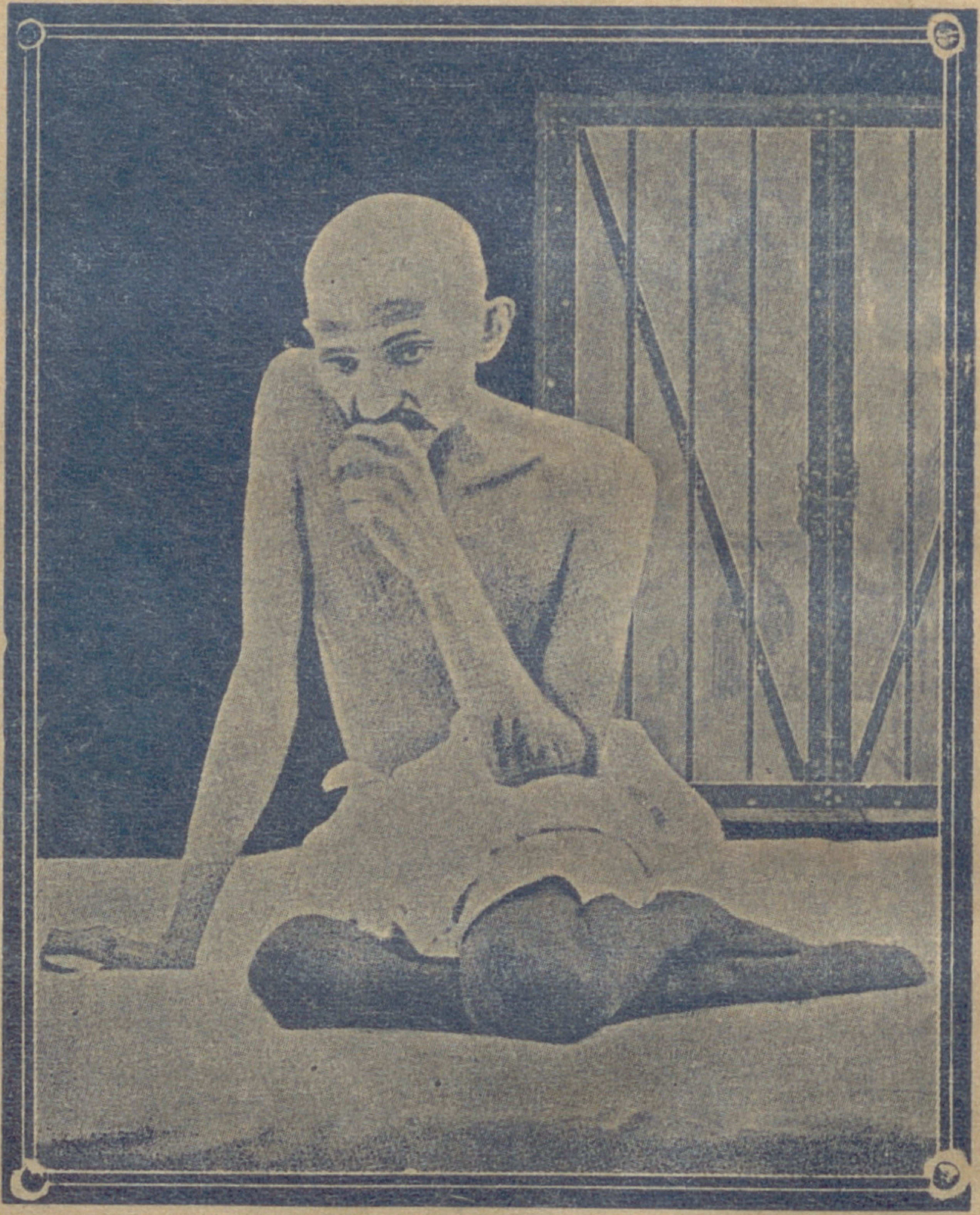

महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी (नज़र क़ैद)

पता—मुंशीसिंह रामसिंह बुकसेलर

हाता नं० ४, मकरावटगंज, कानपुर.